बिजनेस स्टैंडर्ड भोपाल
19 JAN 2013

बाजी मार सकते हैं संकोची स्वभाव के शिवराज

सियासी हलचल

आदिति फडणीस

क्रिसमस की शाम भोपाल में गाड़ी से सफर कर रहे एक नौकरशाह को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का आवास लाइटों से जगमगाता हुआ नजर आया। यह देखकर हैरान उस अधिकारी ने कार के चालक से पूछा, 'वहां क्या हो रहा है?' चालक ने जवाब दिया, 'मुख्यमंत्री साहब ईसाइयों के लिए क्रिसमस पार्टी का आयोजन कर रहे हैं।'

मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। पिछले साल ईद के मौके पर चौहान भोपाल के मुस्लिम बहुल आबादी वाले इलाके शाहजहानाबाद में पदयात्रा पर गए थे जहां उन्होंने घर-घर जाकर लोगों को बधाई दी थी। उससे पिछले साल वह शहर के मुख्य मस्जिद के बाहर खड़े होकर ईद की नमाज पढ़कर बाहर निकलने वालों पर फूल बरसा रहे थे। तयशुदा वह धर्मनिरपेक्ष नहीं हैं, उनकी पृष्ठभूमि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की है। मगर वह अटल बिहारी वाजपेयी के प्रशंसक हैं। वह भाजपा के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने वाजपेयी के जन्मदिन पर यह मांग की थी कि उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जाए। हालांकि हाल ही में रतलाम में सांप्रदायिक दंगे हुए लेकिन इस तरह के दंगे 10 सालों से अधिक समय बाद हुए। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद हुए सांप्रदायिक दंगों में भोपाल में 150 लोगों की जानें गई थीं। राज्य में हिंदू-मुस्लिम दंगों का इतिहास पुराना है। मगर राज्य के मुख्यमंत्री चौहान ने 'तीर्थ यात्रा' को आंशिक सब्सिडी देने की एक योजना की शुरुआत की है और कैलास मानसरोवर की तरह ही अजमेर को भी तीर्थ स्थल माना जाता है।

अक्सर लोग यह भूल जाते हैं कि मुख्यमंत्री के तौर पर उन्होंने भी लगभग नरेंद्र मोदी जितना समय ही बिताया है। अगर इस साल के आखिर में वह राज्य विधानसभा का चुनाव जीत जाते हैं तो मुख्यमंत्री के तौर पर यह उनकी तीसरी पारी होगी। हालांकि अपने पहले कार्यकाल में वह केवल आधे समय के लिए ही मुख्यमंत्री बने थे। वित्तीय प्रबंधन के मामले में मध्य प्रदेश का रिकॉर्ड बढ़िया रहा है और यहां राजस्व घाटा सबसे कम है। भले ही मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ अलग हो गया और ज्यादातर खनिज संपदा नए राज्य के साथ चली गई, मगर मध्य प्रदेश ने दो जिंसों- सोयाबीन और गेहूं के दम पर अपनी स्थिति को बनाए रखने की कोशिश की। भारत की कुल सोयाबीन उपज का 70 फीसदी से अधिक अकेले मध्य प्रदेश से ही आता है। मगर उससे ज्यादा आकर्षक यहां से तेल रहित सोया खली का निर्यात है (सोयाबीन में 40 फीसदी प्रोटीन और 26 फीसदी तेल होता है। जब इससे तेल को अलग कर दिया जाता है तो इसे पशुओं और पक्षियों के आहार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं और अर्जेंटीना, ब्राजील आदि में इसकी जबरदस्त मांग है)। यहां पैदा होने वाले शरबती गेहूं को उत्तरी भारत के राज्य जैसे कि उत्तर प्रदेश और पंजाब ललचाई नजरों से देखते हैं क्योंकि यह गेहूं उनके यहां उगने वाले गेहूं से कहीं अधिक स्वादिष्ट होता है।

राज्य के पास जमीन की कमी नहीं है और इससे उसका काम और आसान हो जाता है। आप बहुत अधिक मशक्कत किए बिना और हायतौबा मचाए बिना मध्य प्रदेश में जमीन खरीद कर उद्योग लगा सकते हैं। हां एक समस्या यह है कि राज्य में बड़े पैमाने पर सामंती व्यवस्था है। यही वजह है कि मध्य प्रदेश में बलात्कार के सर्वाधिक मामले सामने आते हैं। यहां महिलाओं पर अपराध की दर काफी अधिक है। मानव विकास सूचकांक में मध्य प्रदेश काफी नीचे है, हालांकि इसमें सबसे नीचे पायदान पर बिहार का कब्जा बरकरार है।

कहने का तात्पर्य यह है कि शिवराज सिंह चौहान भाजपा के ऐसे मुख्यमंत्री हैं जो अपनी स्थिति का फायदा सबसे कम उठा पाते हैं। उन्हें प्रशासनिक दिग्गज नहीं कहा जा सकता है। वह इससे कोसों दूर हैं। वास्तव में इतने सालों के कार्यकाल में वह कभी यह नहीं बता पाए कि मध्य प्रदेश को लेकर उनका दृष्टिकोण क्या है। उनमें न तो नरेंद्र मोदी की तरह अकड़ है और न ही वह रमन सिंह की तरह चतुराई है। फिर भी जब बात राजनीतिक जनमत तैयार करने की आती है तो वह इन दोनों से काफी आगे हैं। बाबू लाल गौर पहले राज्य के मुख्यमंत्री थे। फिर भी जब उन्हें इस पद से हटाया गया तो वह बिना किसी एतराज के 10 से अधिक सालों से चौहान के सहयोगी के तौर पर काम कर रहे हैं। उमा भारती को लगता था कि वह मध्य प्रदेश की अब तक की सबसे बेहतर मुख्यमंत्री रही हैं। मगर भाजपा छोड़ने के बाद से अब तक चौहान ने उन्हें राज्य में लौटने नहीं दिया है।

चौहान की एक खूबी है जो भाजपा के किसी भी मुख्यमंत्री के पास नहीं है: वह कभी अपनी आवाज ऊपर नहीं करते। उन्हें अपनी भावनाओं पर काबू रखना बखूबी आता है। वह इतनी आसानी से किसी को दुश्मन नहीं बनाते।

ऐसे में हैरान होने की कोई बात नहीं है कि आरएसएस उन्हें काफी पसंद करता है और उन्हें मोदी के मुकाबले में खड़ा करने की कोशिश कर रहा है। मगर वह प्रशासन के मोर्चे पर मोदी से खासे पिछड़ जाते हैं। उन्हें लोग बहुत पसंद करते हैं मगर वह कार्यकुशल नहीं हैं। यह जरूर है कि उन्हें अपने साथ काम करने वालों की पूरी खबर होती है। यही वजह है कि मध्य प्रदेश के वित्त मंत्री राघवजी ने उनके दिमाग में यह बात डाल दी है कि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) राज्य के लिए फायदेमंद नहीं है। यही कारण है कि वह लगातार चार सालों से इसका विरोध करते आ रहे हैं। अगर चौहान वास्तव में चालाक होते तो वह केंद्र से इसके बदले कोई और मोलभाव कर सकते थे। मगर वह तो केवल जीएसटी का विरोध करते आ रहे हैं।

प्रशासन के मोर्चे पर उनकी सीमाएं होने के बाद भी शिवराज सिंह चौहान पर नजर रखी जा सकती है, खासतौर पर राज्य विधानसभा चुनाव के बाद। अगर स्वीकार्यता की बात आए तो राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में चौहान मोदी से बाजी मार सकते हैं। मोदी भले ही लोगों को प्रभावित करने में आगे हों, मगर दोस्त बनाने की कला तो चौहान को ही आती है।